मेवाड़ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित गुरु दक्षता कार्यक्रम का हुआ समापन

18 प्रदेशों के 200 शिक्षकों ने मेवाड़ विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित गुरु दक्षता कार्यक्रम में लिया प्रशिक्षण

चमकता राजस्थान

चित्तौड़गढ़/गंगरार (अमित कुमार चेचानी)। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मानव संसाधन विकास केंद्र, जय नारायण विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं मेवाड़ विश्वविद्यालय, चित्तौड़गढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 14 जुलाई से आयोजित गुरु दक्षता (फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम) का समापन शनिवार को हुआ। एक महीने से चल रहे इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश भर के शिक्षकों को कुल दस माड्यूल के जरिए प्रशिक्षित किया गया। जिसके अन्तर्गत नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षकों को आगामी शिक्षा प्रणाली के क्रियान्वयन हेतु तैयार किया गया। गौरतलब हो कि इसके लिए गत दिनों यूजीसी-एचआरडीसी की तरफ से प्रो. राजेश दुबे तथा मेवाड़ विश्वविद्यालय की तरफ से कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार गदिया ने सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए थे।

इस योजना के अंतर्गत मेवाड़ विश्वविद्यालय के लगभग 200 प्राध्यापकों तथा देश भर के अन्य प्रध्यापकों को यू जी सी-एचआरडीसी की तरफ से गुरु दक्षता कार्यक्रम के तहत फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम में प्रशिक्षित किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 120 सत्रों में देशभर के विभिन्न विषय-विशेषज्ञों ने 10 मॉडयूल में सम्मिलित लगभग 100 विषयों पर प्रशिक्षण दिए। समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इंद्रेश कुमार ने कहा कि सम्माननीय होने के साथ ही गुरू को पूजनीय होने का भी प्रयास करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि गुरू पूजनीय तब होगा, जब वह छात्रों कुछ विषेष या कुछ अलग हट कर के बनाने की कोशिश करेगा। ऐसी स्थिति में छात्र गुरू को अपना सबकुछ मानने लगता है और इस प्रकार गुरू पूजनीय हो जाता है। विशिष्ट अतिथि गुरू घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने कहा कि छात्रों में क्लास लेने के प्रति रूचि उत्पन्न करना शिक्षकों का प्राथमिक दायित्व है। यदि छात्र कक्षा में बैठने के प्रति लालायित नहीं है तो कहीं न कहीं शिक्षक अध्यापन में रूचि उत्पन्न नहीं कर पा रहा है, इसलिये शिक्षकों को नई तकनीक की मदद से कक्षा को रूचिकर बनाने पर जोर देना होगा। विशिष्ट अतिथि मन्दसौर विश्वविद्यालय के कुलपति ब्रिगेडियर बी.एस. रावत ने कहा कि बदलते समय के अनुसार शिक्षकों को भी शोध को और भी नवाचार से सम्पन्न करना होगा। नई तकनीक इसमें उनकी सहायता कर सकती है।

बिना शोध के एवं नई तकनीक के अब अध्यापन करना आसान नहीं रह जायेगा। समारोह की अध्यक्षता कर रहे गीतांजलि इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट के निदेशक प्रो. पी.के. जैन ने कहा कि जो भी व्यक्ति उच्च शिक्षा में शिक्षण या अध्यापन कर रहा है वह दुनिया के शीर्ष दो प्रतिशत लोगों में शामिल है। बाकि की दुनिया उससे हसरत भरी निगाहों से देखती है, अत: शिक्षकों का यह दायित्व है कि वह उस पद हेतु न्यायोचित दक्षता बनाये रखे। मेवाड़ विश्वविद्यालय के विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) सर्वोत्तम दीक्षित ने गुरू दक्षता कार्यक्रम को शिक्षकों के लिये जरूरी बताते हुए कहा कि इससे शिक्षक न केवल शिक्षण जगत में आई नई तकनीकों से वाकिफ हो सकेंगे बल्कि अध्यापन के नये कौशल भी सीख सकेंगे। जो कि छात्रों में कक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण कारक साबित होगा। यूजीसी-एचआरडीसी जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर के निदेशक राजेश कुमार दुबे ने कहा कि गुरू दक्षता के उद्धेश्यों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि गुरू दक्षता कार्यक्रम न केवल गुरूओं को दक्ष करता है बल्कि यह अप्रत्यक्ष रूप से छात्रों को भी नये वैश्विक स्वरूप के अनुसार तैयार करेगा। अतिथियों का स्वागत मेवाड़ विश्वविद्यालय के विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ला ने किया। स्वागत भाषण देते हुए कहा कि यह तीस दिवसीय गुरू दक्षता कार्यक्रम शिक्षकों में अध्यापन, शोध, कौशल व तकनीकी से दक्ष करने में महत्वपूर्ण साबित होगा।

जिन भी अध्यापकों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में हिस्सा लिया निश्चित रूप से वह छात्रों के रूप में भारत का नया भविष्य गढ़ेंगे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 100 विषयों पर आधारित प्रशिक्षण अध्यापकों को नई शिक्षा नीति के अनुरूप भारत को विश्वगुरू बनाने के लिये आवश्यक कौशल अवश्य ही प्रदान किया होगा। इस तीस दिवसीय कार्यक्रम की सम्पूर्ण रिपोर्ट डॉ. सुमित कुमार पाण्डेय ने प्रस्तुत की। डॉ. अरूणा दुबे, डॉ. नेहा रावत, डॉ. रीता देवी, डॉ. राघवेन्द्र दीक्षित सहित अन्य प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के सन्दर्भ में अपना फीडबैक अनुभव साझा किया। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सोनिया सिंगला ने किया। इस अवसर पर यूजीसी-एचआरडीसी जोधपुर की सहायक निदेशिका डॉ. निधि सन्दल, डायरेक्टर एकेडमिक्स डी.के. शर्मा, डायरेक्टर प्लेसमेन्ट हरिश गुरनानी, उपकुलसचिव दीसी शास्त्री, लविना चपलोत सहित विश्वविद्यालय के अधिकारीगण, शिक्षकगण उपस्थित रहे।

>> मेवाड़ विश्वविद्यालय में गुरु दक्षता कार्यक्रम का समापन >>18 प्रदेशों के 200 शिक्षकों ने कार्यक्रम में लिया प्रशिक्षण

गुरु सम्मानीय होने के साथ पूज्यनीय भी बनने का प्रयास करें: इंद्रेश कुमार

गंगरार, 20 अगस्त (जसं.)। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मानव संसाधन विकास केंद्र, जय नारायण विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं मेवाड़ विश्वविद्यालय चित्तौड़गढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 14 जुलाई से आयोजित गुरु दक्षता कार्यक्रम का समापन शनिवार को हुआ।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इन्द्रेश कुमार ने कहा कि सम्माननीय होने के साथ ही गुरु को पूजनीय होने का भी प्रयास करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि गुरु पूजनीय तब होगा, जब वह छात्रों कुछ विशेष या कुछ अलग हट कर के बनाने की कोशिश करेगा। ऐसी स्थिति में छात्र गुरु को अपना सबकुछ मानने लगता है और इस प्रकार गुरु पूजनीय हो जाता है। विशिष्ट अतिथि गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने कहा कि छात्रों में क्लास लेने के प्रति रूचि उत्पन्न करना शिक्षकों का प्राथमिक दायित्व है। यदि छात्र कक्षा में बैठने के प्रति लालायित नहीं है तो कहीं न कहीं शिक्षक अध्यापन में रूचि उत्पन्न नहीं कर पा रहा है, इसलिये शिक्षकों को नई तकनीक की मदद से कक्षा को रूचिकर बनाने पर जोर देना होगा।

विशिष्ट अतिथि मन्दसौर विश्वविद्यालय के कुलपति ब्रिगेडियर बीएस रावत ने कहा

कि बदलते समय के अनुसार शिक्षकों को भी शोध को और भी नवाचार से सम्पन्न करना होगा। नई तकनीक इसमें उनकी सहायता कर सकती है। बिना शोध के एवं नई तकनीक के अब अध्यापन करना आसान नहीं रह जायेगा। समारोह की अध्यक्षता कर रहे गीतांजली इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट के निदेशक प्रो. पीके जैन ने कहा कि जो भी व्यक्ति उच्च शिक्षा में शिक्षण या अध्यापन कर रहा है वह दुनिया के शीर्ष दो प्रतिशत लोगों में शामिल है। बाकि की दुनिया उससे हसरत भरी निगाहों से देखती है, अतः शिक्षकों का यह दायित्व है कि वह उस पद हेतु न्यायोचित दक्षता बनाये रखे। मेवाड़ विष्वविद्यालय के विष्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) सर्वोत्तम दीक्षित ने गुरु दक्षता कार्यक्रम को शिक्षकों के लिये जरूरी बताते हुए कहा कि इससे शिक्षक न केवल शिक्षण जगत में आई नई तकनीकों से वाकिफ हो सकेंगे बल्कि अध्यापन के नये कौशल भी सीख सकेंगे। जो कि छात्रों में कक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण कारक साबित होगा। समापन समाराह को यूजीसी-एचआरडीसी जयनारायण व्यास विष्वविद्यालय जोधपुर के निदेशक राजेश कुमार दुबे ने संबोधित किया।

एक महीने से चल रहे इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश भर के शिक्षकों को कुल दस माड्यूल के जरिए प्रशिक्षित किया गया। जिसके अन्तर्गत नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षकों को आगामी शिक्षा प्रणाली के क्रियान्वयन हेतु तैयार किया गया। गौरतलब है कि इसके लिए गत दिनों यूजीसी-एचआरडीसी की तरफसे प्रो. राजेश दुबे तथा मेवाड़ विश्वविद्यालय की तरफ से कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार गदिया ने सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। इस योजना के अंतर्गत मेवाड़ विश्वविद्यालय के लगभग 200 प्राध्यापकों तथा देश भर के अन्य प्राध्यापकों को यूजीसी-एचआरडीसी की तरफ से गुरु दक्षता कार्यक्रम के तहत फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम में प्रशिक्षित किया गया। कार्यक्रम में कुल 120 सत्रों में देशभर के विभिन्न विषय-विशेषज्ञों ने 10 मॉडयूल में सम्मिलित लगभग 100 विषयों पर प्रशिक्षण दिए।

अतिथियों का स्वागत मेवाड़ विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ला ने किया। तीस दिवसीय कार्य म की सम्पूर्ण रिपोर्ट डॉ. सुमित कुमार पाण्डेय ने प्रस्तुत की। डॉ. अरूणा दुबे, डॉ. नेहा रावत, डॉ. रीता देवी, डॉ. राघवेन्द्र दीक्षित सहित अन्य प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के सन्दर्भ में अपना फीडबैक अनुभव साझा किया। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सोनिया सिंगला ने किया। इस अवसर पर यूजीसी-एचआरडीसी जोधपुर की सहायक निदेशिका डॉ. निधि सन्दल, डायरेक्टर एकेडमिक्स डीके शर्मा, डायरेक्टर प्लेसमेन्ट हरिश गुरनानी, उप कुलसचिव दीप्ती शास्त्री, लविना चपलोत सहित विश्वविद्यालय के अधिकारीगण, शिक्षकगण उपस्थित रहे।

गुरु दक्षता कार्यक्रम सम्पन्न

चित्तौड़गढ़ (प्रातःकाल संवाददाता)। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मानव संसाधन विकास केंद्र, जय नारायण विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं मेवाड़ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 14 जुलाई से आयोजित गुरु दक्षता का समापन शनिवार को हुआ। एक महीने से चल रहे इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश भर के शिक्षकों को कुल दस माड्यूल के जरिए प्रशिक्षित किया गया। जिसके अन्तर्गत नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षकों को आगामी शिक्षा प्रणाली के क्रियान्वयन हेतु तैयार किया गया। गौरतलब हो कि इसके लिए गत दिनों यूजीसी-एचआरडीसी की तरफ से प्रो. राजेश दुबे तथा मेवाड़ विश्वविद्यालय की तरफसे कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार गदिया ने सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। इस तीस दिवसीय कार्यक्रम की सम्पूर्ण रिपोर्ट डॉ. सुमित कुमार पाण्डेय ने प्रस्तुत की। डॉ. अरूणा दुबे, डॉ. नेहा रावत, डॉ. रीता देवी, डॉ. राघवेन्द्र दीक्षित सहित अन्य प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के सन्दर्भ में अपना फीडबैक अनुभव साझा किया। कार्यक्रम का संचालन राजेष भट्ट तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सोनिया सिंगला ने किया। इस अवसर पर यूजीसी-एचआरडीसी जोधपुर की सहायक निदेशिका डॉ. निधि सन्दल, डी.के. शर्मा, हरीश गुरनानी, उपकुलसचिव दीप्ती शास्त्री, लविना चपलोत सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षकगण उपस्थित रहे।

Pratahkal 21-08-2022

>> मेवाड़ विश्वविद्यालय में गुरु दक्षता कार्यक्रम का समापन >>18 प्रदेशों के 200 शिक्षकों ने कार्यक्रम में लिया प्रशिक्षण

गुरु सम्मानीय होने के साथ पूज्यनीय भी बनने का प्रयास करें: इंद्रेश कुमार

गंगरार, 20 अगस्त (जसं.)। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग मानव संसाधन विकास केंद्र, जय नारायण विश्वविद्यालय, जोधपुर एवं मेवाड़ विश्वविद्यालय चित्तौड़गढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 14 जुलाई से आयोजित गुरु दक्षता कार्यक्रम का समापन शनिवार को हुआ।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इन्द्रेश कुमार ने कहा कि सम्माननीय होने के साथ ही गुरु को पूजनीय होने का भी प्रयास करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि गुरु पूजनीय तब होगा, जब वह छात्रों कुछ विशेष या कुछ अलग हट कर के बनाने की कोशिश करेगा। ऐसी स्थिति में छात्र गुरु को अपना सबकुछ मानने लगता है और इस प्रकार गुरु पूजनीय हो जाता है। विशिष्ट अतिथि गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार चक्रवाल ने कहा कि छात्रों में क्लास लेने के प्रति रूचि उत्पन्न करना शिक्षकों का प्राथमिक दायित्व है। यदि छात्र कक्षा में बैठने के प्रति लालायित नहीं है तो कहीं न कहीं शिक्षक अध्यापन में रूचि उत्पन्न नहीं कर पा रहा है, इसलिये शिक्षकों को नई तकनीक की मदद से कक्षा को रूचिकर बनाने पर जोर देना होगा।

विशिष्ट अतिथि मन्दसौर विश्वविद्यालय के कुलपति ब्रिगेडियर बीएस रावत ने कहा कि बदलते समय के अनुसार शिक्षकों को भी शोध को और भी नवाचार से सम्पन्न करना होगा। नई तकनीक इसमें उनकी सहायता कर सकती है। बिना शोध के एवं नई तकनीक के अब अध्यापन करना आसान नहीं रह जायेगा। समारोह की अध्यक्षता कर रहे गीतांजली इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट के निदेशक प्रो. पीके जैन ने कहा कि जो भी व्यक्ति उच्च शिक्षा में शिक्षण या अध्यापन कर रहा है वह दुनिया के शीर्ष दो प्रतिशत लोगों में शामिल है। बाकि की दुनिया उससे हसरत भरी निगाहों से देखती है, अतः शिक्षकों का यह दायित्व है कि वह उस पद हेतु न्यायोचित दक्षता बनाये रखे। मेवाड़ विष्वविद्यालय के विष्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) सर्वोत्तम दीक्षित ने गुरु दक्षता कार्यक्रम को शिक्षकों के लिये जरूरी बताते हुए कहा कि इससे शिक्षक न केवल शिक्षण जगत में आई नई तकनीकों से वाकिफ हो सकेंगे बल्कि अध्यापन के नये कौशल भी सीख सकेंगे। जो कि छात्रों में कक्षा के प्रति रूचि उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण कारक साबित होगा। समापन समाराह को यूजीसी-एचआरडीसी जयनारायण व्यास विष्वविद्यालय जोधपुर के निदेशक राजेश कुमार दुबे ने संबोधित किया।

एक महीने से चल रहे इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश भर के शिक्षकों को कुल दस माड्यूल के जरिए प्रशिक्षित किया गया। जिसके अन्तर्गत नई शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षकों को आगामी शिक्षा प्रणाली के क्रियान्वयन हेतु तैयार किया गया। गौरतलब है कि इसके लिए गत दिनों यूजीसी-एचआरडीसी की तरफसे प्रो. राजेश दुबे तथा मेवाड़ विश्वविद्यालय की तरफ से कुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार गदिया ने सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। इस योजना के अंतर्गत मेवाड़ विश्वविद्यालय के लगभग 200 प्राध्यापकों तथा देश भर के अन्य प्राध्यापकों को यूजीसी-एचआरडीसी की तरफ से गुरु दक्षता कार्यक्रम के तहत फैकल्टी इंडक्शन प्रोग्राम में प्रशिक्षित किया गया। कार्यक्रम में कुल 120 सत्रों में देशभर के विभिन्न विषय-विशेषज्ञों ने 10 मॉड्यूल में सम्मिलित लगभग 100 विषयों पर प्रशिक्षण दिए।

अतिथियों का स्वागत मेवाड़ विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आनन्द वर्द्धन शुक्ला ने किया। तीस दिवसीय कार्य म की सम्पूर्ण रिपोर्ट डॉ. सुमित कुमार पाण्डेय ने प्रस्तुत की। डॉ. अरूणा दुबे, डॉ. नेहा रावत, डॉ. रीता देवी, डॉ. राघवेन्द्र दीक्षित सहित अन्य प्रतिभागियों ने कार्यक्रम के सन्दर्भ में अपना फीडबेक अनुभव साझा किया। कार्यक्रम का संचालन राजेश भट्ट तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सोनिया सिंगला ने किया। इस अवसर पर यूजीसी-एचआरडीसी जोधपुर की सहायक निदेशिका डॉ. निधि सन्दल, डायरेक्टर एकेडमिक्स डीके शर्मा, डायरेक्टर प्लेसमेन्ट हरिश गुरनानी, उप कुलसचिव दीसी शास्त्री, लविना चपलोत सहित विश्वविद्यालय के अधिकारीगण, शिक्षकगण उपस्थित रहे।

Jannayak 21-08-2022